8

तिब्नी

फूट की बुराइयां

वचन पाठः 1 राजाओं 16:15-22

परिवारों, कलीसियाओं, देशों और संगठनों को तोड़ डालने को तैयार दैत्य यदि कोई है तो वह अन्दरूनी फूट है। शैतान की विजय के उद्देश्यों में से एक ''फूट डालो और जय पाओ'' रहा है। यह जानते हुए कि ''जिस घर में फूट हो, वह स्थिर नहीं रह सकता,'' वह भाइयों को भाइयों के विरुद्ध करके परमेश्वर के लोगों को नष्ट करना चाहता है। यदि वह कठफोड़वों का इस्तेमाल करते हुए बाहर से सच्चाई के घर को न गिरा पाए तो फिर भीतर से दीमक का इस्तेमाल करते हुए धीरे-धीरे करके घर को गिरा देगा।

इसकी और सभी कठिनाइयों के साथ इस्राएल को राष्ट्रीय फूट से भी जूझना था, जो ऐसी समस्या थी, जो उसके पतन का अन्तिम कदम बने। फूट की व्याकुलता के लिए यदि कोई सबसे कम तैयार कौम थी तो वह शायद इस्राएल था। देश पर तीन राजाओं ने राज करके उसे तौलिए की तरह इस्तेमाल करके फैंक दिया था। 931 ई.पू. से लेकर कुल पांच राजाओं ने उस पर शासन किया था और पांचों ही अपने सिरों पर परमेश्वर के न्याय के साथ मरे थे। पांचों में से एक (यारोबाम) को परमेश्वर ने मारा था, दो (नादाब और एला) की हत्या हुई थी और एक (जिम्री) ने आत्महत्या कर ली थी। हमें नहीं मालूम की बाशा का क्या हुआ था। यारोबाम और बाशा को सबसे लम्बा शासन दिया गया था, जिसमें यारोबाम का शासन बाइस साल और बाशा का चौबीस साल का था। यारोबाम ने अपने समय का इस्तेमाल अपना ही धर्म स्थापित करने के लिए और बाशा ने अपने समय का इस्तेमाल यारोबाम के धर्म को आगे बढ़ाने के लिए किया था। इसलिए कौम को आवश्यक आत्मिक नेतृत्व देने में दोनों राजा नाकाम रहे थे। इनकी असफलताओं के कारण इस्राएल आत्मिक और ढांचागत रूप से कमज़ोर स्थिति में था। लोगों को आत्मिक जीवन और फिर से परमेश्वर के प्रति समर्पित होने की बड़ी आवश्यकता थी। कौम को इकट्ठा करके परमेश्वर की ओर वापस लाने वाले किसी व्यक्ति की आवश्यकता थी, वरना मौत सुनिश्चित थी। हो सकता है कि अगला राजा इसका उत्तर हो।

परमेश्वर के सब खोजी निराश थे, क्योंकि अगले राजा तिब्नी में उन्हें कोई आशा न मिली। सिंहासन पर राजा को बिठाने के अगले प्रयास ने मामले को और गड़बड़ा देना था, क्योंकि इससे कौम लड़ाई करने वाले दो धड़ों में बंट गई। इस लड़ाई से इस्राएल में चार या पांच साल लम्बी दरार पड़ गई। इस्राएल के विभाजन के इन वर्षों ने कौम को मिटने के कगार पर ला खड़ा किया। राज्य के अधिक देर तक विभाजित रहने पर इसे उत्तर में दमिश्क और पूर्व में अश्शूर की बढ़ती शक्तियों द्वारा नष्ट कर दिया जाना था। कौम को पलों में ही अपनी मृत्यु की घण्टी सुनाई देती।

इस निकट विनाश का क्या कारण था? शैतान ने अपने दुष्चक्र में उन्हें कैसे फंसा लिया।

उसने विनाश के अपने सबसे पसन्दीदा औज़ारों में से एक, फूट का इस्तेमाल किया।

लगभग आधे इस्राएल में प्रसिद्ध होने के बावजूद ओम्री को आधे लोग पसन्द नहीं करते थे। ओम्री की नियुक्ति से नाराज़ लोगों ने तिब्नी नामक आदमी को अपना राजा चुन लिया:

> तब इस्राएली प्रजा के दो भाग किए गए, प्रजा के आधे लोग तो तिब्नी नामक गीनत के पुत्र को राजा करने के लिए उसी के पीछे हो लिए, और आधे ओम्री के पीछे हो लिए। अन्त में जो लोग ओम्री के पीछे हुए थे वे उन पर प्रबल हुए जो गीनत के पुत्र तिब्नी के पीछे हो लिए थे, इसलिए तिब्नी मारा गया और ओम्री राजा बन गया। यहूदा के राजा आशा के इकत्तीसवें वर्ष में ओम्री इस्राएल पर राज्य करने लगा, और बारह वर्ष तक राज्य करता रहा; उसने छह वर्ष तो तिर्सा में राज्य किया (16:21-23)।

तिब्नी ने इस्राएल के एक भाग पर चार या पांच साल राज किया (885 से 881 ई.पू.), जबकि ओम्री ने दूसरे भाग पर राज किया। फूट के समय के दौरान दोनों भागों के बीच एक गृह युद्ध लगा रहा, जब तक अन्त में ओम्री ने तिब्नी पर विजय पाकर पूरे इस्राएल का शासन न सम्भाल लिया।

तिब्नी एक गुमनाम व्यक्ति है। वह इस्राएल के इतिहास के मंच पर केवल एक पल के लिए गिरा, फिर अलोप हो गया। हमें यह भी पता नहीं कि वह मरा कैसे। वह युद्ध में मारा गया? उसका कार्य उसके साथ मर गया? हमें नहीं मालूम।

हम इतना जानते हैं कि उसने इस्राएल के एक भाग को एकता से विभाजन में जाने में अगुआई दी थी। वचन में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि उसका काम सही या सम्मानीय था। यदि वह अपने लोगों को परमेश्वर के वचन और मार्ग को चुनने की सही राह में ले जाता तो निश्चय ही पवित्र आत्मा ने इसका उल्लेख करना था।

दो तरह की फूट पाई जाती है: ईमानदार फूट और बनावटी फूट। पहली फूट परमेश्वर डलवाता है और दूसरी शैतान। एक स्वर्ग की ओर से है और दूसरी पृथ्वी की ओर से। पहली तरह की फूट लिखित सच्चाई और जीवित सच्चाई के कारण होती है (2 कुरिन्थियों 6:16-18)। यीशु ने कहा, ''मैं मिलाप कराने को नहीं, पर तलवार चलाने आया हूं'' (मत्ती 10:34ख)। यीशु के पीछे चलने का निर्णय परिवार यानी पति और पत्नी या मित्रों में फूट डाल सकता है। यह परमेश्वर की ओर से मान्य फूट होगी। यदि मसीही बनना आपके लिए उन लोगों से अपने आप को अलग करना आवश्यक बना देता है, जो मसीह में आपके विश्वास को नष्ट कर देते हैं, आप को मसीह के अविश्वासी बनाते हैं या मसीह के लिए आपके प्रभाव को क्षति पहुंचाते हैं, तो उनमें से निकल आएं। वह फूट आवश्यक और अच्छी है, जो परमेश्वर की इच्छा से है। यह स्वीकार्य फूट है न कि शापित फूट।

बनावटी फूट, फूट की वह किस्म है, जिससे बचना चाहिए। पौलुस ने लिखा:

> अब हे भाइयो, मैं तुम से विनती करता हूं, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुम ने पाई है, फूट पड़ने, और ठोकर खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो; और उन से दूर रहो। क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते हैं;

और चिकनी-चुपड़ी बातों से सीधे-सादे मन के लोगों को बहका देते हैं(रोमियों 16:17, 18)।

बनावटी लोग गड़बड़ करने के लिए किसी मुद्दे की तलाश में रहकर परेशानी पैदा करते हैं। वे विचारों, व्यक्तित्वों और निजी इच्छाओं पर फूट डालते हैं न कि सच्चाई पर।

इस्राएल में कौन सी फूट हुई थी: ईमानदार या बनावटी? बनावटी फूट ही होगी। यानी वह फूट जो नहीं होनी चाहिए थी। वह फूट जिससे परमेश्वर का नहीं, बल्कि शैतान का लाभ हुआ।

आप कल्पना कर सकते हैं? आत्मिक मृत्यु के किनारे लड़खड़ाते हुए इस कौम ने दो धड़ों में बंटकर और अपनी बची हुई ऊर्जा एक-दूसरे के विरुद्ध खर्च करके अपने दु:खों को और बढ़ा लिया। गृहयुद्ध की कठिनाइयों पर काबू पाने के बजाय इस्राएल का अधिक ध्यान इसी बात पर था।

इस्राएल के इतिहास का यह पन्ना विशेष कर हमारे लिए भी निर्देशात्मक है। अन्य सच्चाइयों के साथ यह हमें फूट की बुराइयां बताता है। उनकी असफलताओं के आसुंओं में से इन बुराइयों को देखें। इन बुराइयों को ध्यान से तौलें और निश्चय करें कि आप अपने आप को उनसे परेशान नहीं होने देंगे।

फूट हमारी शक्ति को कम कर देती है

बनावटी फूट की पहली बुराई यह है कि हमें यह ध्यान देना आवश्यक है कि फूट हमारी शक्ति को कम कर देती है। इस्राएलियों के लिए अपनी सारी ऊर्जा कौम के आत्मिक जीवन बहाल करने के लिए लगानी आवश्यक थी। इसके बजाय चार या इससे अधिक वर्षों तक इसकी ऊर्जा एक गुट को मिटाने में चली गई। प्रार्थना सभाएं करने के बजाय उन्होंने युद्ध सभाएं कीं; प्रवचन सुनने के लिए जमा होने के बजाय वे अपनी तलवारें तेज करने के लिए इकट्ठा होते थे। उनके संसाधन परमेश्वर की नहीं, मनुष्य की इच्छा पूर्ति में लगे।

एक छोटा सा संगठित समूह शक्तिशाली होता है; वैसे ही फूट पड़ने पर बड़े से बड़ा समूह भी कमज़ोर होता है। लड़ी जाने वाली आत्मिक लड़ाइयों के लिए आवश्यक ऊर्जा फूट के कारण पैदा होने वाली चिन्ताओं और परेशानियों में खर्च हो जाती है। खच्चर लात मार कर खींच नहीं सकता; और जब लोग आपस में झगड़ते हैं तो आमतौर पर वे आगे नहीं बढ़ पाते।

आपने एक पिता की कहानी सुनी होगी, जिसने अपने बेटों को सबक सिखाने के लिए लकड़ियां बांध कर दी थीं। इससे पहले उन सबने एक-एक छड़ी उठाकर तोड़ डाली थी। उसने अपने पुत्रों से कहा, ''तुमने देखा कि एक छड़ी को आसानी से तोड़ा जा सकता है।'' उसने दो छड़ियां लीं और थोड़ा सा और ज़ोर लगाकर उन्हें तोड़ डाला। फिर उसने कहा, ''बेटा, यदि तुम दो ही इकट्ठे रहोगे तो तुम्हें जीत पाना कठिन होगा।'' पिता ने कई छड़ियां इकट्ठी लेकर उन्हें तोड़ने की कोशिश की। उसके लिए अपने हाथों से इन्हें तोड़ना संभव नहीं था; क्योंकि वे बड़ी मजबूत थीं। तब उसने समझाया, उसने कहा, ''बेटा, तुमने देखा कि यदि तुम इकट्ठे रहोगे तो शैतान के लिए तुम पर विजय पाना असम्भव होगा। अकेले तुम कमज़ोर हो। दो होने पर तुम मजबूत हो जाओगे। सब इकट्ठे होने पर ही तुम अजेय हो सकते हो।'' हम सब जानते हैं कि जो सबक उसने दिया वह सच है।

स्पष्ट सोच रखते हुए कौन है जो एकता के महत्व को नकारेगा? परन्तु इस्राएल ने ऐसा किया

और कई बार हम भी करते हैं। इस्राएल को अपना राजा चुनने के लिए परमेश्वर के पास जाकर उससे पूछना चाहिए था। फिर उन्हें परमेश्वर के चयन को पूरा करने के लिए एकजुट होना चाहिए था। ऐसा करके वे परमेश्वर की इच्छा को पूरा करते हैं, लोगों के रूप में इकट्ठे होते और एक कौम के रूप में अजेय होते। परन्तु लोगों ने अपनी पसन्द मनवानी चाही और वे सहमत नहीं हो पाए। एक बात दूसरी का कारण बनी और बिगाड़ हो गया। ऐसा ही होता है। फूट से आमतौर पर परमेश्वर के मार्ग का ठुकराया जाना निकलता है। लोग तभी एक हो सकते हैं, जब वे परिस्थितियों के कारण इकट्ठे होने को विवश हों या जब वे परमेश्वर की इच्छा मानने को सहमत हों। सब लोगों को बाद वाले ढंग की इच्छा और तलाश करनी चाहिए।

फूट हमारी वफादारी को कम करती है

फूट की एक और बुराई जो हम छोड़ नहीं सकते, वह यह है कि यह हमारी वफादारी को कम करती है। इस्राएल के लिए इस्राएल के परमेश्वर के साथ वफादार होना आवश्यक था। उनके लिए उसे अपना एकमात्र अगुवा मानना आवश्यक था। राजा ने पृथ्वी पर उसका प्रतिनिधि होना था। राजा का काम अपनी कौम को पृथ्वी पर परमेश्वर के ''अलग किए हुए'' लोगों के रूप में अगुआई देना था। इस्राएल के दो गुटों में बंट जाने पर हर परिवार एक गुट का वफादार हो गया। परमेश्वर के अधीन एक मन, एक जान और एक कौम होने के बजाय इस्राएल दो कौमों में बंट गया, जिनमें हर एक दूसरे पर हावी होना चाहता था। वे परमेश्वर के अधीन कौम कैसे हो सकते थे? उनका समर्पण परमेश्वर से हटकर गुटबाजी पर, परमेश्वर की इच्छा से हटकर अपनी सनक पर था।

नये नियम में सांसारिकता के चिह्नों में डाह, द्वेष, झगड़ा और फूट बताए गए हैं (1 कुरिन्थियों 3:3)। अन्य शब्दों में नाचने, शराब पीने और ए ग्रेड की फिल्में देखने से बढ़कर सांसारिकता है। आज कई लोग इन तीन गतिविधियों से डरावनी बातों में वापस आते हैं और वे आ भी सकते ह; अफसोस की बात है कि इन्हीं में से कुछ लोग डाह, झगड़े और फूट करवाने वाले हैं। पवित्र आत्मा को मालूम था कि युगों तक कलीसिया में झगड़ा और फूट होगी इसलिए उसने और किसी भी बुराई से जो अधिक ध्यान खींच सकती थीं, बढ़कर झगड़े के विरुद्ध चेतावनी दी।

क्या हमने अपनी वफादारी होने की बुराई साम्प्रदायिक कलीसिाएं बढ़ने के साथ नहीं देखी? मसीही होने का दावा करने वाले लोग फूट डालते हैं और गुटबाजी को बढ़ावा देते हैं। वे अपने आप को विशेष नाम देते, अपनी शिक्षाओं के लिए विशेष धर्मसार लिखते और उन्हें आगे चलाने के लिए संगठित करते हैं। जो वफादारी केवल मसीह और उसकी कलीसिया के लिए होनी चाहिए थी, वह ''उनकी कलीसिया'' और ''उनके विश्वासों'' के लिए बन जाती है। मसीह उनकी योजना का केवल एक भाग है, जबकि उसे पूरी योजना होना चाहिए। यदि हम बिना पूर्वाग्रह के समय निकालकर परमेश्वर के वचन से सलाह लें, तो हम पाएंगे कि किसी प्रकार की साम्प्रदायिक कलीसिया होगी ही नहीं। बाइबल केवल एक ही कलीसिया की बात करती है (इफिसियों 4:4, 5), जिसे मसीह ने कलवरी पर मर कर खरीदा (प्रेरितों 20:28)। यह ''मेरी'' कलीसिया, ''तेरी'' कलीसिया या ''हमारी'' कलीसिया नहीं, बल्कि *उसकी* कलीसिया है। इसमें बिना मसीह की इच्छा के किसी को मिलाया नहीं जाता, और बिना जोड़े या कम किए मसीह की

कलीसिया के रूप में रहे बिना सही ढंग से मसीह के लिए जीया नहीं जा सकता।

मैं प्रचार करने वाले अपने छात्रों को एक बड़ी गलती से बचने के लिए सावधान रहने को कहता हूं: अन्तिम दिन में परमेश्वर के सिंहासन के पास मत आना, जिसमें तुम्हारे रिकॉर्ड में लिखा हो कि सुसमाचार की अपनी सेवकाई में आपने विचारों, व्यक्तियों या निजी सनक के कारण कलीसिया में फूट डाली। आप सुसमाचार के प्रचारक हैं तो शान्ति का, आत्मा की एकता का प्रचार करें न कि फूट का। भाइयों को तोड़ें नहीं, उन्हें जोड़ें। परमेश्वर तो शान्ति का परमेश्वर है और मसीह शान्ति का राजकुमार; और सुसमाचार संसार पर शान्ति का शुभ संदेश और सब लोगों के लिए शुभ इच्छा।

फूट हमारा ध्यान हटाती है

फूट की तीसरी बुराई यह है कि यह हमारा ध्यान हटाती है। यह हमें एक ओर कर देती, हमें एक ओर ज़ोर देती और हमें परमेश्वर के उद्देश्य से हटाती है।

इस्राएलियों का ध्यान कहां होना चाहिए था? यदि इस्राएली अपनी बुलाहट के अनुसार चलते तो उनके लिए परमेश्वर के उद्देश्य में वे परमेश्वर की इच्छा की खोज और कौम के लिए परमेश्वर की योजना तलाश रहे होते। इस्राएल के लिए अपने आस-पास की कौमों में यहोवा अर्थात अपने परमेश्वर की श्रेष्ठता की घोषणा करनी आवश्यक थी। कौम के दो भागों में बंट जाने से इस्राएल का ध्यान सिंहासन पर ''हमारा'' राजा या ''उन'' पर विजय पाने के लिए उसका ध्यान हट गया था।

यही त्रासदी कलीसिया के साथ हो सकती है और होती है, जब हम गुटों में बंट जाते हैं तो उस एक सच्चे उद्देश्य को नहीं देख पाते जो परमेश्वर ने कलीसिया के लिए बनाया है कि कौमों में गवाही हो, संसार के लोगों में सुसमाचार सुनाया जाए (मरकुस 16:15; 1 तीमुथियुस 3:15)। फूट के कारण हमारा ध्यान परमेश्वर की इच्छा के बजाय अपनी निजी योजनाओं और अपने विशेष गुटों के लक्ष्य पूरे करने पर लग जाता है।

मैं ऐसी कलीसियाओं को जानता हूं जिनमें फूट पड़ गई और वे अस्तित्व के अपने ईश्वरीय उद्देश्य को भूल गईं। संगठित मण्डलियों के रूप में उनमें से प्रत्येक सुसमाचार को संसार में ले जाने के लिए काम कर सकती थी। उन्होंने इस पर और उन लोगों पर जो इस पर काम कर सकते थे, धन खर्च किया, परन्तु उनमें फूट पड़ गई। छोड़ जाने वाले गुटों को और इमारतें बनानी पड़ीं और इसके लिए उन्हें वह धन जो उन्होंने देना था, खर्च करना पड़ा। पीछे रह गए गुट अब इतने छोटे हो गए हैं कि वे अब अपनी पुरानी इमारतों को ही बरकरार रख सकते हैं। दोनों मामलों में संगठित कलीसिया जो कुछ कर सकती थी, वह दो कलीसियाएं बन गईं, जो अपनी सहायता भी नहीं कर सकतीं। फूट ने उनका ध्यान भंग कर दिया। उनके साथ वैसा ही हुआ जैसा इस्राएल में तिब्नी और ओम्री के साथ हुआ था।

इस्राएल में फूट पड़ने पर बंटे हुए ध्यान की बुराई उस पर पड़ी और उसकी इच्छा बिना ईश्वरीय उद्देश्य के रह गई। अब वह परमेश्वर की इच्छा को पूरा नहीं करना चाहते थे, क्योंकि अब वे एक मूर्तिपूजक कौम बन गए थे, जो ''अपने तरीके से काम करने'' पर ज़ोर देते थे।

सारांश

क्या हम उस सबक को सीखेंगे जो इस्राएल के अन्धकार भरे क्षण हमें सिखाते हैं? फूट परमेश्वर से दूर ले जाती है न कि परमेश्वर की ओर। यह हमारी शक्ति को निचोड़ लेती, हमारी वफादारी कम करती और हमारा ध्यान भंग करती है।

कैंसस के गेहूं के खेत में खो गई एक छोटी लड़की की कहानी बताई जाती है। वह अपनी मां से बिछुड़ कर खड़े अनाज के ज्वार में रास्ता भूल गई थी। यह पता चलने पर कि वह खो गई है, उसकी तलाश के लिए अभियान चलाया गया। समय का ध्यान रखना आवश्यक था, क्योंकि रात को ठण्डी हवाओं और दूसरे खतरों से लड़की जान को खतरा हो सकता था। खोजने वाले हर दिशा में गए पर कोई लाभ न हुआ। कीमती समय बीतता गया। खोज का दिन निकल गया और फिर रात आ गई। अगले दिन सुबह खोज करने वालों के एक अगुवे ने सुझाव दिया कि हर कोई एक-दूसरे का हाथ पकड़कर उन विशाल खेतों में एक बड़ी कतार में आगे बढ़ते हुए एक-एक इंच पर नज़र रखे, जब तक वह लड़की मिल न जाए। उन्होंने हाथ पकड़े और खेतों में चलने लगे। वह एक खेत के बीच में थी। वह अपने आप को गरम रखने के प्रयास में आड़ में नीचे छिपी हुई थी, परन्तु उन्होंने उसे ढूंढ़ने में बहुत देर कर दी। वह मर चुकी थी। बाद में किसी ने टिप्पणी की, ''यदि हमने पहले हाथ पकड़ लिए होते तो उसे बचाया जा सकता था।'' यही अवलोकन खोए हुए लोगों में मसीह का संदेश ले जाने वाले विभाजित धार्मिक संसार के प्रयासों के बारे में परमेश्वर का निर्णय हो सकता है। यदि हम बाइबल की स्पष्ट शिक्षाओं को मानकर और केवल मसीह की कलीसिया बनकर, सचमुच में मसीह में एक होकर हाथ मिला लें तो हम इस संसार में पाप की जकड़ से कहीं अधिक लोगों को बचा सकते हैं। फूट और अवज्ञा से नकारा हुए हम एक दुष्ट, सुसमाचार सुनने के प्रति लापरवाह संसार का ध्यान नहीं खींच सकते कि वह इसे मान ले।

मसीह में एकता परमेश्वर के लिए बहुमूल्य और लोगों के लिए आकर्षक है। मसीहियत की प्रामाणिकता का एक पक्का प्रमाण मसीह में हमारी एकता है। फूट की बुराइयां वे लोग भी देख सकते हैं, जो गैर मसीही हैं। हमें फूट की नहीं, एकता की आवश्यकता है।

हम परमेश्वर की हजूरी में इकट्ठे जाने वाले मुसाफिर हैं। मसीही लोगों को प्रेरितों के काम की पुस्तक वाले आरम्भिक मसीही लोगों की संगति और एकता ढूंढ़ने का दावा करना चाहिए।

आइए हम नये नियम के मसीही होने के रूप में मेल के बन्ध में आत्मा की एकता का आग्रह और इसे दिखाने का प्रयास करें (इफिसियों 4:3)। यीशु की वापसी की प्रतीक्षा करते हुए 2 पतरस 3:14 का संदेश कि ''शान्ति से उसके सामने ठहरो'' हमारा एजेंडा हो।

सीखने के लिए सबक:

फूट परमेश्वर की ओर से नहीं, बल्कि शैतान की ओर से हैं। इससे बचें।